This question paper contains 7 printed pages.]

7782 आपका अनुक्रमांक ....

M.A. (एम.ए.) /II **A**

HINDI (हिन्दी)

Group I – Anuvad : Siddhant aur Vyavahar

वर्ग (झ) – अनुवाद : सिद्धान्त और व्यवहार

Paper 15 – Anuvad Vyavahar – I

प्रश्न-पत्र 15 – अनुवाद व्यवहार – I

(प्रवेशवर्ष 2000 और तत्पश्चात्)

समय : 3 घण्टे *पूर्णांक : 50*

(इस प्रश्नपत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

नोट : *प्रश्नपत्र पर अंकित पूर्णांक एम.ए. हिन्दी परीक्षा के वर्ग 'ब' (स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग एवं नॉन-फॉर्मल सैल आदि) के परीक्षार्थियों के लिए मान्य है। वर्ग 'अ' (नियमित विद्यार्थियों) के लिए इन अंकों का समानुपातिक पुनर्निर्धारण परीक्षाफल तैयार करते समय किया जाएगा।*

1. किन्हीं **दो** अवतरणों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए :

15×2 = 30

(i) It was seven O'clock of a very warm evening .n the Seeonce hills when Father Wolf wake up from his day's rest, scratched himself, yawned, and spread out his paws one after the other to get rid of the sleepy feeling in their tips. Mother Wolf lay with her big gray nose dropped across her four tumbling, squealing cubs, and the moon shone into the mouth of the cave where they all lived. "Augrh !" said Father Wolf, "It is time to hunt again", and he was going to spring downhill when a little shadow with a bushy tail crossed the threshold and whined : "Good luck go with you, O Child of the Wolves, and good luck and strong white teeth go with the noble children that they may never forget the hungry in this world."

It was the jackal–Tabaqui, the Dish-lickes and the wolves of India despise Tabaqui because he runs about making mischief, and telling tales, and eating rags and pieces of leathes from the village rubbish-heaps. They are afraid of him too, because Tabaqui, more than any one else in the jungle, is apt to go mad, and then he forgets that he was ever afraid of any one and runs through the forest biting everything

in his way. Even the tiger hides when little Tabaqui goes mad, for madness is the most disgraceful thing that can overtake a wild creature. We call it hydrophobia, but they call it dewanee – the madness – and run.

(ii) The saddest part of life lies not in the act of dying, but in failing to truly live while we are alive. Too many of us play small with our lives, never letting the fullness of our humanity see the light of day. I've learned that what really counts in life, in the end, is not how many toys we have collected or how much money we've accumulated, but have many of our talents we have liberated and used for a purpose that adds value to this world. What truly matter most are the lives we have touched and the legacy that we have left. Tolstoy put it so well when he wrote : "We live for ourselves only when we live for others." It took me forty years to discover this simple point of wisdom. Forty long years to discover that success cannot really be pursued. Success ensures and flows into your life as the unintended yet inevitable by product of a life spent enriching the lives of other people. When you shift your daily focus from a

compulsion to survive towards a lifelong commitment to serve, your existence cannot help but explode into success.

(iii) Investment in real estate and realty stocks are very common these days. However, under the current law, a striking difference in tax rates may be observed in taxation of property and stocks. Bringing parity in the taxation principles of the two is a policy matter which may have unintended side effects, such as perverse incentives, excess burden/dead-weight loss etc. that need to be addressed. Therefore the question whether capital gains on properties should be treated at par with gains on the sale of stocks requires balancing of various aspects.

It needs to be kept in mind that the features of the two investments i.e. property and stocks are not entirely the same. Property transaction carries a higher value, it illiquid in nature and is not price sensitive compared to stocks, which could show high volatility and may fluctuate due to various external and internal factors. The frequency of stock transactions is normally high as compared to property transactions. Therefore, an introduction of

lower tax on property at par with equity may be a dampener for collection of tax revenue for the government.

2. अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए : 20

भारतीय स्वाधीनता के संघर्ष में न केवल देश में रहने वाले अपितु विदेशों में रहने वाले भारतीय भी प्रयासरत थे। विदेशी शासन के विरुद्ध पुरुषों के साथ-साथ महिलाओं ने भी कंधे से कंधा मिलाकर योगदान दिया था। ऐसी महिलाओं में श्रीमती भीखाजी कामा का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। भीखाजी का जन्म 24 सितंबर, 1861 में मुबंई के पारसी परिवार में हुआ था। इनके पिताजी का नाम सोराबजी फ्रामजी पटेल था। वे एक धनी व्यवसायी थे और शान से रहते थे। भीखाजी की आरंभिक शिक्षा मुंबई के एक स्कूल में हुई थी। वे बचपन से ही समाज सेवा में रुचि रखती थीं। 20 वर्ष की अवस्था में इनका विवाह रुस्तमजी कामा के साथ हुआ।

एक बार मुंबई और उसके आस-पास के इलाकों में प्लेग फैल गया। भीखाजी कामा जी-जान से रोग-पीड़ितों की सेवा में जुट गईं। दीन-दुखियों की सेवा करते-करते उन्हें भी प्लेग हो गया। डॉक्टरों ने उन्हें लंदन जाकर चिकित्सा कराने की सलाह दी।

विदेश में जाकर भीखाजी ने स्वतंत्रता संग्राम के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया। उनके क्रांतिकारी भाषणों से इंग्लैण्ड की सरकार भयभीत हो गई। उनके विचारों से प्रभावित होकर 1908 में उन्हें जर्मनी आमंत्रित किया गया। वह किसी भी भारतवासी को अंतरराष्ट्रीय राजनीति में मिला प्रथम सम्मान था। भारत के लिए तो और भी गर्व की बात थी कि यह सम्मान एक महिला को प्राप्त हुआ था। इसी अवसर पर भीखाजी ने राष्ट्रीय ध्वज तैयार किया जिसमें लाल, पीले और हरे रंग की आड़ी पट्टियाँ थी तथा बीच में काले अक्षरों से 'वंदेमातरम्' लिखा था। ध्वज के आसपास चांद तारे अंकित थे। सर्वप्रथम राष्ट्रीय ध्वज का निर्माण कर, उसे अंतरराष्ट्रीय मंच में फहराने का श्रेय इसी वीरांगना को प्राप्त है।

अथवा

अति महत्वपूर्ण श्रेणी में गिने जाने वाले लोगों की सुरक्षा व्यवस्था के एक तामझाम में बदल जाने की आलोचना लम्बे समय से की जाती रही है। लेकिन ऐसे उदाहरण बहुत कम हैं जब किसी राजनेता ने अपने लिए मुहैया कराई गई सुरक्षा व्यवस्था को गैर जरूरी बताकर उसे स्वीकार करने से मना कर दिया हो। उल्टे ज्यादातर नेता किसी न किसी बहाने अपने आपको देश में उपलब्ध सबसे उच्च कोटि के सुरक्षा गार्डों से घिरे दिखना चाहते हैं, भले इसकी ज़रूरत उन्हें न हो।

आज भी बड़े पैमाने पर केवल साधारण पुलिसकर्मी नहीं, बल्कि आतंकवाद जैसे गंभीर संकट का सामना करने के मकसद से गठित राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड यानी एन एस जी के जवान भी अति महत्वपूर्ण लोगों की सुरक्षा में लगा दिए गए हैं। इस मसले पर एन.एस.जी. ने एक बार फिर थोड़ी सक्रियता दिखाई है और अपने प्राथमिक कर्तव्यों यानी आतंकवाद से निपटने तक सीमित रखने के लिए कुछ नए मानदण्ड तय करने का फैसला किया है। अच्छी बात यह है कि गृह मंत्रालय ने भी इस बार हरी झंडी देने में देर नहीं लगाई। अगर इस पर अमल होता है तो फिलहाल कम से कम छह ऐसे विशिष्ट लोगों की एनएसजी की सुरक्षा छिन जाएगी। अभी अतिमहत्वपूर्ण व्यक्ति का दर्जा पाए बाईस लोगों को इस तरह की सुरक्षा मिली हुई है और इनमें से ज्यादातर पिछले लगभग एक दशक से इस सुविधा का लाभ उठा रहे हैं।

एक आकलन के मुताबिक देश में सर्वोत्तम सुरक्षा कवच पाने वाली कम से कम तीस फीसद हस्तियां ऐसी हैं, जिन्हें सुरक्षा की जरूरत ही नहीं है। वहीं लगभग पचास फीसद विशिष्ट माने जाने वाले लोगों के लिए हल्की सुरक्षा पर्याप्त रहेगी। इसकी समीक्षा कराने के बाद जब कुछ नेताओं से यह सुरक्षा वापस लेने की बात कही गई तो हर बार *संबंधित* नेताओं और राजनीतिक दलों की आपत्तियों और संसद में हंगामे के बाद सरकार ने अपने कदम पीछे खींच लिए।